CHAPTER 1, नमक का दरोगा

PAGE 16, प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:1

1. कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?

उत्तर: “नमक का दारोगा” की कहानी में सबसे प्रभावशाली चरित्र वंशीधर है। वह एक ईमानदार, शिक्षित, कर्तव्यनिष्ठ और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति हैं। हालाँकि उनके पिता ने उन्हें घर की दयनीय स्थिति का हवाला देते हुए एक बेईमान सबक सिखाया, लेकिन वंशीधर इसके विपरीत ईमानदार हैं। वह स्वाभिमानी है, जबकि अदालत में उसके खिलाफ एक गलत निर्णय लिया गया था, उससे उसकी नौकरी छीन ली गई थी, लेकिन उसने अपना आत्म-सम्मान नहीं खोया । अन्त में उसे अपनी ईमानदारी,सत्यनिष्ठा और कर्तव्य-परायणता का उचित फल मिलता है। पंडित अलोपीदीन उसे अपनी सारी संपत्ति का आजीवन प्रबंधक देते हैं ।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:2

2. ‘नमक का दारोगा‘ कहानी में पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के कौन से दो पहलू (पक्ष) उभरकर आते हैं?

उत्तर: पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के दो पहलू "नमक के वस्त्र" कहानी में सामने आते हैं:

1. लक्ष्मी के उपासक - पंडित अलोपीदीन लक्ष्मी के उपासक हैं। वह लक्ष्मी को सर्वोच्च मानते हैं। वह एक कुशल वक्ता भी हैं, भाषण और धन के साथ, उन्होंने सभी को अपने अधीन कर लिया है, यहाँ तक कि सभी को अदालत में खरीद रखें हैं। इसीलिए बिना किसी डर के वे नमक का अवैध कारोबार करते हैं। वंशीधर द्वारा पकड़े जाने पर, वह न केवल अदालत में धन बल का उपयोग करके खुद को मुक्त कर लेता है, बल्कि वंशीधर को अपनी नौकरी से भी निकालवा देता है।

2. ईमानदारी की प्रशंसा - कहानी के अंत में, वे एक उज्ज्वल रूप के साथ सामने आते हैं। वे वंशीधर की ईमानदारी से प्रभावित हैं। स्वमं उसके घर जाते हैं और उसे अपनी सारी

संपत्ति का एक स्थायी प्रबंधक बनाते हैं। उन्हें अच्छा वेतन और सुविधाएं देते है तथा उसका मान-सम्मान बढ़ाते है।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:3

3. कहानी के लगभग सभी पात्र समाज की किसी-न-किसी सच्चाई को उजागर करते हैं।

निम्नलिखित पात्रों के संदर्भ में पाठ से उस अंश को उद्धृत करते हुए बताइए कि यह समाज की किस सच्चाई को उजागर करते हैं -

1. वृद्ध मुंशी

2. वकील

3. शहर की भीड़

उत्तर:

(क) वृद्ध मुंशी - वृद्ध मुंशी एक चरित्र है जो समाज के एक सामान्य मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके लिए धन का महत्व सबसे अधिक है। उन्हें बस पैसे से मतलब है चाहे वह जहाँ से भी आये। वे अपने पुत्र को ऊपरी आय करने का भी

ज्ञान देते है।

(ख) वकील - अलोपीदीन के पक्ष में मजिस्ट्रेट के फैसले पर वकील का खुश होना न्यायिक प्रक्रिया को शर्मसार करता है। पैसे के दम पर न्यायपालिका को प्रभावित करना आम बात हो चुकी है। न्यायपालिका में वकीलों का धर्म न्याय दिलाना नहीं रह गया है उनका काम सिर्फ पैसे कमाना रह गया है।

(ग) शहर की भीड़- कहानी में एक जगह कहा जा रहा है कि "भीड़ के कारण छत और दीवार में कोई अंतर नहीं है" सही है। जिन लोगों ने आज भीड़ का आकार ले लिया है उन्हें सही और गलत से कोई फर्क नहीं पड़ता है। वे किसी के साथ हो रहे न्याय अन्याय से कोई मतलब नहीं है वे बस दूसरे के दुःख का तमाशा देखती है।उनकी अपनी कोई विचारधारा नहीं है, उन्हें सिर्फ निंदा करने और तमाशा देखने के लिए एक अवसर की आवश्यकता है।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:4

4. निम्न पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए -

नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ।

1. यह किसकी उक्ति है?

2. मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा गया है?

3. क्या आप एक पिता के इस वक्तव्य से सहमत हैं?

उत्तर:

(क) यह कथन वंशीधर के पिता का है।

(ख) पूर्णमासी के चंद्रमा का अर्थ है कि चाँद महीने में एक बार पूर्णिमा को दिखाई देती है और मासिक वेतन भी महीने में केवल एक बार प्राप्त होता है। उसी तरह, पूर्णिमा

के बाद, चंद्रमा का आकार घट जाता है और अंत में यह समाप्त हो जाता है। इसी तरह, एक समय में वेतन पूरा होने के बाद, यह महीने के अंत तक खर्च किया जा रहा है।

(ग) नहीं! वंशीधर के पिता के इस कथन से मैं सहमत नहीं हूँ। पिता अपने बच्चे के लिए दुनिया में सबसे बड़ा नायक होता है और बच्चे के चरित्र निर्माण में उसकी सबसे अधिक भूमिका होती है और ऐसे में अगर कोई पिता भ्रष्टाचार के रास्ते से गुजरता है, तो यह है आने वाली पीढ़ी का सबसे बड़ा दुर्भाग्य।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:5

5. 'नमक का दारोगा' कहानी के कोई दो अन्य शीर्षक बताते हुए उसके आधार को भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

(क) **कर्तव्य: वंशीधर एक ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ दारोगा है, जो अपने कर्तव्य से विचलित नहीं होता है, यहां**

तक कि अलोपीदीन का भारी रिश्वत भी उसे अपने कर्तव्य से नहीं रोक पाता है। यहां तक कि अदालत में भी वह हार जाता है और उसे नौकरी छूट जाती है। लेकिन उसने अपनी ईमानदारी और कर्तव्य के प्रति वफादारी नहीं छोड़ी।

(ख) **सत्य की विजय - इस कहानी में, सत्य ने कभी कोई झुकाव नहीं दिखाया, सत्य के मार्ग में शुरू से अंत तक कई बाधाएं थीं, लेकिन सत्या ने अपना रास्ता नहीं बदला और न ही एक पल के लिए भी हार या निराश हुआ। वंशीधर के सत्य के सामने अलोपीदीन को नत-मस्तक होना पड़ता है।**

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:6

6. कहानी के अंत में अलोपीदीन के वंशीधर को मैनेजर नियुक्त करने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए। आप इस कहानी का अंत किस प्रकार करते?

उत्तर: कहानी के अंत में, अलोपीदीन ने वंशीधर को प्रबंधक नियुक्त किया।

1. अलोपीदीन एक व्यापारी था, जो प्रणाली का पालन करता था, वस्तुओं, कीमतों, दंड, सभी नीतियों और भ्रष्ट प्रणाली का सही उपयोग करता था। वह खुद अंदर से शायद एक सही आदमी था। वंशीधर को इतना ईमानदार व्यक्ति दिखाया गया था जिसे अपना प्रबंधक बनाकर, वह अपनी संपत्ति के बारे में पूरी तरह आश्वस्त हो सकता था।
2. वंशीधर की दृढ़ता, अन्याय को सहन करना लेकिन अपने कर्तव्य पथ से न हटना, अलोपीदीन के आत्म-ग्लानि का कारण बन गया, क्यूंकि उसकी वजह से उसकी नौकरी भी छूट गई। उस आत्म-ग्लानि से छुटकारा पाने के लिए उनके पास इससे बेहतर कोई उपाय नहीं था।

इस प्रकार समाप्त करूंगा कि, "अलोपीदीन पश्चाताप से भरे वंशीधर के पास जाएगा और अपनी संपत्ति के लिए प्रबंधकीय पद को स्वीकार करने की पेशकश करेगा। लेकिन वंशीधर ने हाथ जोड़कर उस पद को लेने से इंकार कर दिया, और कहता है कि फैसले से पहले रिश्वत नहीं ली तो अब क्यों लूँ? अलोपीदीन इस बात से प्रभावित हो जाता है और वह अदालत में अपने

अपराध को कबूल करने के लिए जाता है और सच्चाई बताता है। अलोपीदीन को जुर्माना भरना पड़ता है और अदालत वंशीधर के खिलाफ सभी आरोपों को खारिज कर देती है और उसे उसकी नौकरी पर बहाल कर देती है। और वे दोनों करीब रहते हैं। उनके जीवन के अंत तक संबंध।"

PAGE 17, प्रश्न - अभ्यास - पाठकेआसपास

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -पाठके आसपास:1

7. दारोगा वंशीधर गैरकानूनी कार्यों की वजह से पंडित अलोपीदीन को गिरफ्तार करता है, लेकिन कहानी के अंत में इसी पंडित अलोपीदीन की सहृदयता पर मुग्ध होकर उसके यहाँ मैनेजर की नौकरी को तैयार हो जाता है। आपके विचार से वंशीधर का ऐसा करना उचित था? आप उसकी जगह होते तो क्या करते?

उत्तर: मुझे लगता है कि वंशीधर के लिए उनके व्यक्तित्व और चरित्र के अनुसार ऐसा करना सही नहीं था। वह एक ईमानदार,

कर्तव्यनिष्ठ और स्वाभिमानी व्यक्ति था, अलोपीदीन ने उसकी नौकरी के साथ-साथ उसकी प्रतिष्ठा भी ख़त्म की थी। ऐसे व्यक्ति की नौकरी करना मुझे जीवन भर धिक्कारता। अलोपीदीन के इस प्रस्ताव पर, मैं उसे बताता था कि "मैंने जो प्रतिष्ठा और वर्दी खो दी है, उसे मैं वापस नहीं पा सकता, लेकिन मेरे अंदर से ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा ख़त्म नहीं हुयी है। मैं आपकी काली कमाई का रक्षक नहीं हो सकता। यदि आप सच को दोषी समझते है, तो अदालत में सच्चाई बताएं और मुझे अपनी वर्दी और अपनी नौकरी वापस दिलवा दें, अन्यथा मुझे माफ कर दें।"

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -पाठके आसपास:2

8. नमक विभाग के दारोगा पद के लिए बड़ों-बड़ों का जी ललचाता था। वर्तमान समाज में ऐसा कौन-सा पद होगा जिसे पाने के लिए लोग लालायित रहते होंगे और क्यों?

उत्तर: मेरे विचार में, वर्तमान समाज में, प्रशासनिक सेवा,

पुलिस सेवा, आयकर, बिक्री कर, सीमा शुल्क इत्यादि ऐसे कार्य हैं जिनके लिए लोग उत्सुक हैं क्योंकि इन सभी पदों से उच्च आय के साथ-साथ पद प्राप्त होता है। ये देश के नीति निर्माता भी हैं।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -पाठ के आसपास:4

9. 'पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया। वृद्ध मुंशी जी द्वारा यह बात एक विशिष्ट संदर्भ में कही गई थी। अपने निजी अनुभवों के आधार पर बताइए -

1. जब आपको पढ़ना-लिखना व्यर्थ लगा हो।

2. जब आपको पढ़ना-लिखना सार्थक लगा हो।

3. 'पढ़ना-लिखना' को किस अर्थ में प्रयुक्त किया गया होगा:साक्षरता अथवा शिक्षा? (क्या आप इन दोनों को समान मानते हैं?)

उत्तर:

1. जब मैंने देखा और पढ़ा कि लोग गंदगी फैला रहे हैं, तो मैंने उनके पढ़ने और लिखने को व्यर्थ पाया।

2. जब हम शिक्षित लोगों को अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की योजना बनाते देखते हैं, तो हम उनके पढ़ने और लिखने को सार्थक पाते हैं।
3. 'पढ़ना और लिखना 'का उपयोग शिक्षा के अर्थ में किया गया है। नहीं, दोनों में अंतर है।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -पाठ के आसपास:5

10. लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। वाक्य समाज में लड़कियों की स्थिति की किस वास्तविकता को प्रकट करता है?

उत्तर: यह वास्तविकता है कि हमारे समाज में लड़कियों को भी घास-फूस की तरह माना जाता है। समाज का मानना है कि जिस तरह बिना किसी कारण के घास-फूस बढ़ता है, उसी तरह से लड़कियां भी हैं जो बिना बात के खर्च बढाती हैं, उनसे कुछ मिलता नहीं है । इसके विपरीत, उनके दहेज की व्यवस्था और चिंता करनी पड़ती है। लड़कियों की उपेक्षित स्थिति को दर्शाने वाली इस वाक्य से पता चलता है कि लड़कियों को एक बोझ

माना जाता है, और उनकी रुचियों का कोई ख्याल नहीं है।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -पाठके आसपास:6

11. इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य करनेवाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। अपने आस-पास अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों को देखकर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? उपर्युक्त टिप्पणी को ध्यान में रखते हुए लिखें।

उत्तर: यह समाज की असली तस्वीर है। इस कहानी में अलोपीदीन जैसे काले काम करने वाले लोगों का वर्चस्व है। ऐसे लोगों को धन बल से न्याय प्रणाली तक अपनी कठपुतली बनाकर कानून का उपहास करते देखा जाता है और इस कारण एक ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, स्वाभिमानी और ईमानदार व्यक्ति को सजा होती है। सजा इस लिए होती है क्यूंकि कि उसने

अलोपीदीन पर उंगली कैसे उठाई? ऐसे लोगों को देखकर घृणा होती है, वर्तमान सामाजिक और न्यायिक व्यवस्था पर अफसोस होता है। ऐसे लोगों को देखकर बहुत आक्रोश होता है और ऐसे लोगों के प्रति सहानुभूति रखने वालों पर बहुत गुस्सा आता है, हर कोई अपवित्र लगता है।

PAGE 16, प्रश्न - अभ्यास - समझाइए तो ज़रा

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास –समझाइए तो ज़रा :1

1. नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर की मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए।

उत्तर: इसमें नौकरी की प्रतिष्ठा और गरिमा से ज्यादा ऊपरी कमाई यानी रिश्वत को अधिक महत्व दिया जा रहा है और इसी बात पर ध्यान केंद्रित करने को कहा जाता है।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -समझाइएतोज़रा :2

2. इस विस्तृत संसार में उनके लिए धैर्य अपना मित्र, बुद्धि अपनी पथप्रदर्शक और आत्मावलंबन ही अपना सहायक था।

उत्तर: वंशीधर एक ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति है, जो समाज में ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की मिसाल कायम करता है। जब दुनिया बुराई की छाया में पूरी तरह से ढँक जाती है तो वंशीधर धैर्य को अपना मित्र, बुद्धि को अपना मार्गदर्शक और आत्मनिर्भरता को अपना सहायक मानता है।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -समझाइएतोज़रा :3

3. तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया।

उत्तर: रात को सोते हुए वंशीधर को अचानक पुल से गुजर रहे वाहनों की गड़गड़ाहट सुनाई दी, उसे कुछ भ्रम हुआ और उसने सोचा कि कुछ गलत हो रहा है। इसलिए उन्होंने तर्क दिया कि अंधेरी रात में वाहन कौन ले जाएगा? और इस तर्क ने उनके

भ्रम की पुष्टि कर दी।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास –समझाइए तो ज़रा :4

4. न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं।

उत्तर : इसका अर्थ यह है कि धन की शक्ति के सामने न्याय और नीति भी अपना अस्तित्व खो देती है। वकीलों का धर्म न्याय के बजाय पैसा बन गया है, अदालत के फैसले सच्चाई नहीं बल्कि पैसे का चेहरा हैं। न्याय और नीति भी पैसे के पक्ष में है। ये आपके पक्ष में जा सकती है बस लक्ष्मी आपके पास होनी चाहिए।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास –समझाइए तो ज़रा :5

5. दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी।

उत्तर : दुनिया की प्रकृति का मूल्यांकन करने वाली यह पंक्ति कहती है कि लोग कुछ भी करें या न करें, लेकिन निंदा, अफवाह या मसालेदार खबरें फैलाने के लिए उनकी जीभ हर पल तैयार रहती है। आधी रात को, जब पूरी दुनिया सो रही थी, वंशीधर ने अलोपीदीन को गिरफ्तार कर लिया, लेकिन यह खबर हर जगह फैल गई।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -समझाइएतोज़रा :6

6. खेद ऐसी समझ पर! पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया।

उत्तर : वंशीधर के पिता वृद्ध मुंशी जी के पास अपने बेटे की ईमानदारी पर नाराजगी व्यक्त करने के लिए ये शब्द हैं। वह सोचता है कि अलोपीदीन से रिश्वत न लेकर और उसे गिरफ्तार करके उसके बेटे ने गलती की और उसने रिश्वत के पैसे कमाने का मौका गंवाकर अपनी संवेदनहीनता दिखाई है। उसने ऐसी मूर्खतापूर्ण बात करने के कारण उसका पढ़ना और लिखना बेकार हो गया है।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -समझाइएतोज़रा :7

7. धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला।

उत्तर : वंशीधर ने सत्य, निष्ठा और ईमानदारी के धर्म का पालन करते हुए अलोपीदीन द्वारा चालीस हजार रुपये का प्रस्ताव ठुकरा दिया। धर्म मनुष्य की दिशा निर्धारित करता है और वंशीधर के 'धर्म' ने अलोपीदीन के 'धन' को कुचल दिया, अर्थात धन सत्ता को वंशीधर के धर्म से पराजित होना पड़ा।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -समझाइएतोज़रा :8

8. न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया।

उत्तर : यहाँ न्यायालय और अदालतों की गरिमा और मर्यादा सहित कार्य शैली पर व्यंग्य है। न्याय का मंदिर है ये अदालत

लेकिन वहां भी सब कुछ बिकाऊ था। मुंशी वंशीधर और पंडित अलोपीदीन का मुकदमा चला। वंशीधर धर्म के लिए और अलोपीदीन धन के सहारे अधर्म के लिए लड़ रहे थे। इस प्रकार न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया था।

PAGE 18, प्रश्न - अभ्यास - भाषाकीबात:

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -भाषाकी बात:1

1. भाषा की चित्रात्मकता, लोकोक्तियों और मुहावरों के जानदार उपयोग तथा हिंदी-उर्दू के साझा रूप एवं बोलचाल की भाषा के लिहाज से यह कहानी अद्भुत है। कहानी में से ऐसे उदाहरण छाँटकर लिखिए और यह भी बताइए कि इन के प्रयोग से किस तरह कहानी का कथ्य अधिक असरदार बना है?

उत्तर :

1. **भाषा की चित्रात्मकता-**“ जाड़े के दिन थे और रात का

समय। नमक के सिपाही,चौकीदार सब नशे में मस्त थे...एक मील पूर्व की ओर जमुना बहती थी,उस पर नावों का एक पुल बना हुआ था।दारोगा जी किवाड़ बंद कियेमीठी नींद से सो रहे थे।”

2. **लोकोक्तियाँ** -पूर्णमासी का चाँद,शूलउठना,जन्म भर की कमाई,प्यासबुझना,फूले नहीं समाये,सिर पीटना,जीभजगना,गले लगाना,पंजे में आना,सन्नाटाछाना,सागरउमड़ना,हाथ मलना,ईमान बेचना। सुअवसर ने मोती दे दिया,घर में अँधेरा-मस्जिद में उजाला,धुल में मिलना,निगाहबांधना,कगारे का वृक्ष।
3. **हिंदी-उर्दू का साझा रूप-** बेगरज को दांव पर लगाना ज़रा कठिन है।इन बातों को निगाह में बाँध लो।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -भाषाकीबात:2

2. कहानी में मासिक वेतन के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है? इसके लिए आप अपनी ओर से दो-दो

विशेषण और बताइए। साथ ही विशेषणों के आधार को तर्क सहित पुष्ट कीजिए।

उत्तर :कहानीमें मासिक वेतन के लिए दो ही विशेषणों का प्रयोग हुआ है: पूर्णमासी का चाँद और पीर का मज़ार। दो अन्य संभावित विशेषण”

1. चार दिन की चांदनी: वेतन के आने के चार दिन (कुछ दिनों) के बाद, जो भी जरूरत होती है, ले ली जाती है, फिर पैसा खत्म हो जाता है और फिर से वही हेरफेर शुरू हो जाता है।
2. पल भर की ख़ुशी: वेतन मिलते ही अपार खुशी होती है, लेकिन अगले ही पल से या जैसे ही खर्च शुरू होता है, रुपए के साथ-साथ खुशियां कम हो जाती हैं, सारा पैसा सिर्फ एक पल के लिए हाथ में आता है।

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -भाषाकीबात:3

3. (क) बाबूजी आशीर्वाद!

(ख) सरकारी हुक्म!

(ग) दातागंज के!

(घ) कानपुर!

दी गई विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ एक निश्चित संदर्भ में निश्चित अर्थ देती हैं। संदर्भ बदलते ही अर्थ भी परिवर्तित हो जाता है। अब आप किसी अन्य संदर्भ में इन भाषिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हुए समझाइए।

उत्तर:

(**क**) **बाबूजी आशीर्वाद**- बाबूजी आशीर्वाद दीजिये**।**

(ख) सरकारी हुक्म - का सबको पालन करना पड़ता है।

(ग) **दातागंज के** - दातागंज के पड़े भोत स्वादिष्ट है।

(घ) कानपुर - कानपुर का झील बहोत सुन्दर है।

PAGE 18, प्रश्न - अभ्यास - चर्चाकरें

11:1:1:प्रश्न - अभ्यास -चर्चा करें:1

पढ़कर बड़ी-बड़ी डिग्रियों, न्याय और विद्‍वता के बारे में आपकी

क्या धरना बनती है ? वर्तमान समय को ध्यान में रखते हुए इस विषय पर शिक्षको के साथ एक परिचर्चा आयोजित करें।

उत्तर:

कक्षा में अपने साथियो तथा शिक्षकों के साथ मिल कर सामूहिक चर्चा कीजिये तथ उपरोक्त विषयों पे हर विद्यार्थी की राय जानिए। इसके बाद सबके राय का विश्लेषण कीजिये।